International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी के लेखन की विशेषताओं का अध्ययन

डॉ राजेन्द्र गंगाधरराव मालोकर

हिन्दी वभाग प्रमुख

श्री निकेतन आर्ट्स कॉमर्स कालेज नागपुर ;महाराष्ट्र

सार

कविवर निराला हिंदी छायावादी काव्य-चेतना के सर्वथा विशिश्ट पहचान प्रस्तुत करने वाले लोकप्रिय और युग कवि है । छायावादी काव्य-धारा की ओजस्वी भावाभिव्यंजना की विराट् और नव्य मौलिकता अन्तःयोजित है, उसे पडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने सर्वाधिक और सर्वोच्च स्तर प्रदान किया है । इस वैशिश्ट्य को हम पूर्ण रूप से 'राम की भाक्ति-पूजा में देखते हैं । राम की भाक्तिपूजा की सरंचना या वस्तु विधान परम्परागत खण्ड़काव्यों के वस्तुविधान से भिन्न है । खण्ड़काव्यों में इतिवृत्तात्मक भौली में कथा कही जाती थी, वर्णनों तथा विवरणों के माध्यम से कथा आगे बढ़ती थी । राम की शक्ति पूजा में नाट्य भौली का प्रयोग हुआ है । इस कविता के आरम्भ में पृश्ठभूमि के रूप में किसी दृश्य की योजना नहीं की गई है ।

प्रस्तावना

'राम की भाक्ति-पूजा' प्रगति काव्य दृश्टि की एक ऐसी अनुपम देन है, जिससे रचनाकार निराला की अद्भुत काव्य क्षमता का परिचय मिलता है । प्रस्तुत प्रबन्धकाव्य का उदय सन् 1936 में हुआ, जिसमें राम-रावण के परस्पर युद्ध और मुख्य रूप से राम के अन्तर्द्वन्द्व का चित्र है ।

प्रकृति का मानवीकरण छायावादी भौली की मुख्य विशेशता है । निराला जी ने संध्या सुन्दरी नामक अपनी इस रचना में संध्या को बिल्कुल मानवी का रूप दे दिया है अर्थात् संध्याकाल को एक सुन्दर युवती के रूप में वर्णन किया है । संध्या रूपी सुंदरी आकाश मार्ग से भूमि पर धीरे -धीरे उतर रही है । उस समय भूमि भांत है ।

अलसता की -सी लता

किन्तु कोमलता की वह कली

सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह

छाँह सी अम्बर -पथ से चली ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संध्या रूपी सुन्दर औरत जब भूमि पर उतर रही है तब कहीं भी कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ रही है । संध्याकाल के धीमे प्रकाश के कारण लताएँ आलसी दिखाई पडती है । परन्तु वे कलियाँ मृदु भी है । संध्या -सुन्दरी अपनी सहेली निंस्तब्धता के कंधे पर बाहें डालकर छाया की तरह आकाश मार्ग से चली आ रही है । अर्थात् कवि ने संध्याकाल के सन्नाटे और भ्रांतिपूर्ण वातावरण को संध्या -सुंदरी की सहेली के रूप में वर्णन किया है ।

संध्याकाल जब भूमि भर छा जाता है तब कहीं कोई आवाज नहीं होती । केवल एक अस्पश्ट आवाज चुप चुप चुप ही फैली है । यह आवाज आकाश व भूमि के कोने -कोने तक फैली हुई है । इसके अलावा कोई ध्वनि सुनाई नहीं पडती । देखिए -

मदिरा की वह नदी बहाती आती

थके हुए जीवों को वह सस्नेह

प्याला एक पिलाती

सुलाती उन्हें अंक पर अपने

दिखलाती फिर विसमृति के वह अगणित मीठे सपने

अर्धरात्री की निश्चलता में हो जाती जब लीन

कवि का बढ़ जाता अनुराग

विरहाकुल कमनीय कंठ से

आप निकल पड़ता तब एक विहाग ।

संध्या -सुन्दरी अपने साथ एक मदिरा की नदी -सी बहाती हुई आती है । दिन भर के परिश्रम के कारण थके -माँदे प्राणियों को मदिरा का एक -एक प्याला देकर अपनी गोद में लिटाकर बड़े प्रेम से सुलाने लगती है । इससे प्रेरित सारे प्राणी अपने आपको भूलकर गहरी नींद सोने लगते है । अर्धरात्री की भ्रांतिपूर्ण परिस्थिति में सबको वह अनगिनत स्वप्न दिखाती है । तब अर्धरात्री की निश्चलता में संध्या -सुन्दरी लीन हो जाती है । इससे संध्या -प्रेमी कवि के हृदय में प्रेम भावना उमड़ जाती है और उसके विरह से व्याकुल सुन्दर कंठ से विहाग नामक एक नया राग अपने आप उदय होता है ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी के लेखन की विशेषताओं का अध्ययन

निराला जी ने इलाहाबाद के मार्ग पर एक गरीब मजदूरिन को पत्थर तोड़ते हुए देखा । दुपहर की कडी धूप से बचने के लिए वहाँ कोई छाया नहीं थी । उस मजदूरिन का रंग सांवला था । उसका सारा अंग यौवन से भरपूर था । उसकी आँखें झुकी हुई थी । वह अपने हाथ में भारी हथौडा लेकर दिल लगाकर अपने काम में लगी हुई थी । उसके सामने वृक्षों की कतारों और चहारदीवारों से युक्त विशाल महल था ।

देखते देखा मुझे तो एक बार

उस भवन की ओर देखा छिन्न तार

देखकर कोई नहीं

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं सजा सहज सितार

सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार ।

एक क्षण के बाद वह कांपी सुधर

ढुलक माथे से गिरे सीकर

लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा –

मैं तोड़ती पत्थर

अचानक कवि ने देखा कि वह उनकी ओर देख रही है । फिर उसकी दृष्टि उस विशाल भवन की ओर पड़ी और अपने जीर्ण वस्त्रों को देखा । अर्थात् उसने कवि की ओर इस तरह कातर नेत्रों से देखा मानों वह अपनी करूण कहानी सुना रही हो । उसकी दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है कि वह मार खाने पर भी रोनेवाली नहीं है । जब हमदर्दी कोई न हो तो आंसू कैसे आएंगे ? कवि ने सजे हुए सितार पर भी वैसी करूणोत्पादक झंकार नहीं सुनी थी जैसी झंकार उस महिला की हृदय स्पर्शी दृष्टि में सुनाई पडी । वह अपने को संभालकर अपने काम में लग गई । उसके माथे से पसीने की बूँदें ढुलक कर नीचे गिरीं । फिर भी वह अपने काम में यों लग गई कि मानो वह कह रही थी मैं तोड़ती पत्थर ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जूही की कली

विजय वन –वल्लरी पर
सोती थी सुहाग –भरी –स्नेह– स्वपन –मग्न

अमल –कोमल –तनु तरूणी –जूही की कली,

दृग बंद किये, शिथिल पत्रांक में,

वासंती निशा थी,

विरह –विधुर प्रिया संग छोड़

किसी दूर देश में था पवन

जिसे कहते है मलयानिल ।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की विख्यात कविता जूही की कली से अवतरित की गई है । इस कविता को कवि की खड़ी बोली की पहली कविता कहा जाता है । इस कविता में कवि ने जूही की कली तथा पवन के माध्यम से नायक –नायिका का प्रणय भाव तथा श्रृंगारिक चेश्टाओं का बड़ा मोहक चित्रण किया है ।

व्याख्या – वसंत ऋतु की रात्रि का मादक वातावरण छाया हुआ था । निर्जन, एकांत, सूने वन के किसी कोने में जूही की लता के पत्तों में छिपी जूही की कली जिसकी पंखुड़ियाँ स्वच्छ, सुन्दर तथा कोमल थी, सोयी पड़ी थी । उसके नेत्र बंद थे । भारीर अलसाया हुआ था और उसकी उस लेटी हुई मुद्रा को देखकर लगता था जैसे वह अपने प्रिय पवन के प्रेम, प्रणय– अठखेलियों के सपने देख रही है । जूही की कली के माध्यम से कवि मुग्धा तरूणी युवती का चित्र अंकित कर रहा है । मुग्धा, नायिका जिसका अंग –अंग कोमल, यौवन छवि से दीप्त है, भौया पर लेटी है । उसके अवयव सुडौल है, वह तन्वंगी है, स्थूलकाय नहीं । भौया पर लेटी हुई नायिका की पलकें बंद है, उसका भारीर अलसाया हुआ है और वह नेत्र बंद किए अपनी पुरानी स्मृतियों में डूबी हुई है तथा भविष्य में प्रिय मिलन के सुनहरे सपने भी देख रही है। जूही की कली का प्रियतम भीतल, मंद, सुगंधित पवन विदेश चला गया था। अतः इस समय वह प्रोशितपतिका नायिका के समान विरह–व्यथा में डूबी हुई उदास थी ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राम की भाक्तिपूजा

पहली पंक्ति रवि हुआ अस्त के तुरंत बाद राम-रावण के युद्ध का चित्र प्रस्तुत किया गया है । कविता के अंत में भी युद्ध का परिणाम नहीं बताया गया, मात्र यह संकेत दिया गया है कि राम की साधना सफल हुई । आगे के परिणाम की कल्पना स्वयं पाठक पर छोड़ दी गई है,

जय हो जय हो पुरूशोत्तम नवीन

कह भाक्ति राम के वदन में हुई लीन ।

इस प्रकार कविता की पहली पंक्ति के साथ नाट्य मंच पर पर्दा उठा था और अंतिम पंक्तियों के साथ पटाक्षेप हो गया है ।

राम की भाक्तिपूजा निराला की उन प्रसिद्ध रचनाओं में से है, जिस पर उनकी ख्याति का स्तम्ब आधारित है । यद्यपि उसका कथानक राम कथा पर आधारित है, तथापि कवि ने मौलिक उद्भावनाएं भी की है । कुछ समय पूर्व तक यह समझा जाता था कि या तो वह निराला की मौलिक उद्भावना है, अथवा देवी भागवत् पुराण और शिव महिम्न् स्तोत्र से प्रेरणा ग्रहण कर उन्होंने इस काव्य की नवीन परिकल्पना की है । कुछ लोगों का यह भी विचार था कि निराला बंगाल में रह चुके थे, अतः वहां की भाक्ति पूजा से प्रभावित होकर उन्होंने इस कथा का निर्माण किया था ।

बादल राग

बादल राग कविता के छः खंड है । ये छहों खंड मिलकर एक कविता बनाते है, पर प्रत्येक खंड अपने - आप में एक पूर्ण तथा स्वंतन्त्र रचना भी है । इस कविता में कवि बादल को विप्लव का बादल कहता है । अतः बादल क्रांतिकारी का प्रतीक है जो एक ओर अपनी भाक्ति से पूंजीपतियों , भोशकों का विध्वंस करता है तथा दूसरी ओर सर्वहारा की सहायता सेवा कर उसके जीवन की खुशियां लाता है । ऊँचे-ऊँचे वृक्ष तथा अट्टालिकांए पूंजीवाद की प्रतीक है तथा छोटे सुकुमार पौधे तथा जीर्ण बाहु, भीर्ण भारीर वाले किसान सर्वहारा वर्ग के ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मैं अकेला

मैं अकेला

देखता हूँ, आ रही

मेरे दिवस की सन्ध्या वेला ।

पके आधे बाल मेरे,

हुए निश्प्रभ गाल मेरे,

चाल मेरी मंद होती जा रही ,

हट रहा मेला ।

प्रसंग – ये पंक्तियाँ निराला के गीत मैं अकेला से उद्धृत की गई हैं । जीवनभर कश्ट, क्लेश और भारीरिक तथा मानसिक व्याधियों से प्रताड़ित कवि अनुभव करता है कि अब वृद्धावस्था आ पहुंची है और अंत भी निकट है। पहले प्रिय पत्नी तथा पुत्री सरोज के असामयिक निधन ने उनकी कमर ही तोड़ दी थी और वह सूनापन अनुभव करने लगे थे । उसी मानसिक दशा में लिखे कवि के ये मार्मिक उद्गार है ।

व्याख्या – मैं अकेला हूँ, मेरा कोई आत्मीय नहीं है, जिससे अपने सुख-दुख की बात कह सकूं । अतः जीवन में केवल सूनापन ही सूनापन रह गया है । अपने भारीर को देखता हूँ, तो लगता है कि बुढ़ापा तेजी से आ रहा है, मेरे जीवन का संध्याकाल आ पहुंचा है और मृत्यु भी निकट है । मेरे प्राण रूपी सूर्य अस्त ही होने वाले हैं और मृत्यु भी निकट है । मेरे सिर के बाल पक कर सफेद हो रहे है, गालों पर झुर्रियां पड़ गई है, उनकी कान्ति नश्ट हो गई है, वे पीले पत्तों की तरह निश्प्रभ हो रहे है । भारीर इतना दुर्बल हो गया है कि मैं दृढ़ कदमों से चल भी नहीं पाता, मेरी चाल मंद पड़ गई है । अब पहले की तरह न मित्रों का जमघट जुड़ता है, न रिश्तेदार मेरी बात पूछते है और न मेरी कविता के भक्त और प्रशंसक, सहकर्मी साहित्यकार ही आते हैं । अतः जो रौनक पहले रहती थी, वह अब समाप्त हो गई है । अब तो प्रातः से रात तक घर में सन्नाटा रहता है, मनहूसियत छायी रहती है । लगता है मेला उठ गया है अतः चहल-पहल समाप्त हो गई है ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों में अपना विशिश्ट स्थान रखती है । धर्म, दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र में तो भारत की तुलना विश्व का कोई अन्य देश नहीं कर सकता । भारत तथा भारतवासियों को अपनी संस्कृति तथा गौरवशाली परम्परा पर गर्व है कविवर निराला हिंदी छायावादी काव्य-चेतना के सर्वथा विशिश्ट पहचान प्रस्तुत करने वाले लोकप्रिय और युग कवि है । छायावादी काव्य-धारा की ओजस्वी भावाभिव्यंजना की विराट् और नव्य मौलिकता अन्तःयोजित है, उसे पडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने सर्वाधिक और सर्वोच्च स्तर प्रदान किया है । इस वैशिश्ट्य को हम पूर्ण रूप से 'राम की भाक्ति-पूजा में देखते हैं ।

संदर्भ

- **हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र भाुक्ल**
- **आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह**
- **हिन्दी साहित्य एवं भाशा का इतिहास – डॉ. राम विलास गुप्त**
- **हिन्दी साहित्य का इतिहास – भयाम चन्द्र कपूर**
- **स्वतंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मी सागर**
- **हिन्दी साहित्य की भूमिका – हज़ारी प्रसाद द्विवेदी**